3 हे प्रभुवर धन्य हो तुम

हे प्रभुवर धन्य हो तुम, निज में ही रहते हो ।
निज स्वरूप को दर्शाते, ज्ञायक में ही रहते हो ।। (२)
तुम जैसा बन जाऊँ, सम्यक्दर्शन पा जाऊँ।
हे प्रभु... हे प्रभु... हे प्रभु... हे प्रभु.... ॥टेक॥

वीतराग छवि प्यारी है, जग जन तो मनहारी है।
समता पाठ पढाती है, ध्यान की याद दिलाती है ।।
निज स्वरूप में जाना है, शुद्धातम में रहना है।
तुम जैसा तुम जैसा, हे प्रभु... हे प्रभु... ॥१॥

ऐसा ही प्रभु में भी हूँ, ये प्रतिविम्व ही मेरा है।
भली भांति मैंने पहचाना, ऐसा रूप भी मेरा है ।।
अब ना ये गलती करना, निज में ही दृष्टि करना है।
तुम जैसा तुम जैसा, हे प्रभु... हे प्रभु... ॥२॥

ध्रुवदृष्टि प्रगटी मुज में, अब ध्रुव में ही स्थिरता हो ।
ज्ञेयो में उपयोग ना जावे, ज्ञायक में ही रमता हो ।।
अब नहीं पर में जाना है, निज में ही रम जाना है।
तुम जैसा तुम जैसा, हे प्रभु... हे प्रभु... ॥३॥

जैसा प्रभु का रूप है, वही स्वरूप ही मेरा है।
परम पारिणामिक अविकारी, ध्रुव स्वरूप ही मेरा है।
मोक्षपुरी में चलना है, शिवरमणी को वरना है।
तुम जैसा तुम जैसा, हे प्रभु... हे प्रभु... ॥४॥

हे प्रभु! आप धन्य हैं क्योंकि आप अपने आत्म स्वरूप में ही रहते हैं और आप स्वरूप को ही दिखाते हैं और अपने ज्ञायक स्वरूप में निवास करते हैं। हे प्रभु! मेरी भावना है कि मैं सम्यकदर्शन पाकर आपका समान बन जाऊँ॥ टेक॥

आपकी वीतरागी मुद्रा अत्यंत सुंदर है और जगत के जीवों का मन हरने वाली है। आपकी मुद्रा समता भाव की शिक्षा देती है और हमें ध्यान करने की प्रेरणा देती है। हे प्रभु! मेरी भावना है कि आपके समान मुझे अपने शुद्धात्मा में और अपने आत्म स्वरूप में ही रहना है॥ १॥

हे प्रभु! आपको देखकर ऐसा लगता है कि यह प्रतिबिंब मेरे स्वरूप को ही दिखा रहा है। मैं भी आपके समान हूँ। मैंने आपका रूप सम्यक प्रकार से पहचान लिया है कि मेरा स्वरूप भी आपके समान है। मेरी भावना है कि अब मुझे आत्मा को भूलने की गलती नहीं करना है और अपनी आत्मा की दृष्टि करना है॥ २॥

हे प्रभु! आपके दर्शन करने से मेरे अंदर में ध्रुव चैतन्य की दृष्टि प्रकट हो गई है। अब भावना यह है कि चैतन्य में ही स्थिर रहूँ, मेरा उपयोग ज्ञेयों में न जाए और ज्ञायक में ही रमण करे। अब मुझे परद्रव्यों में ना जाकर आत्मा में ही रमण करना है॥ ३॥

हे प्रभु! जैसा आपका स्वरूप है वैसा ही मेरा स्वरूप है। मैं भी परम परिणामिक भाव वाला, विकारों से रहित ध्रुव स्वरूप वाला हूँ। मेरी भावना है कि अब मुझे भी मोक्ष में चलना है और मुक्तिरूपी वधू का वरण करना है॥ ४॥